Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 4 ~ Issue 1 (2016)pp: 35-37
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

आधुनिक भारतीय दर्शन का संप्रत्यय (1828 से 1952 तक)–एक नजर मे

डॉ.भूपेन्द्र कौर
सहायक प्राध्यापिका
शिक्षा विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद

सार–
आजकल समकालीन पाश्चात्य दर्शन का, विशेष कर भाषा–विश्लेषण, अस्तित्ववद और साम्यवाद का भारतवासियों पर इतना प्रभाव पड रहा है कि वे इन विषयो का विवेचन पूर्णतया पाश्चात्य दर्शन के दृष्टिकोण से ही कर रहे है। किन्तु इसे समकालीन भारतीय दर्शन के अन्तर्गत नही रखा जा सकता है। यह निश्चित है कि यह प्रवृत्ति बढती गई तो भारतीय दर्शन का अपना व्यक्तित्व नष्ट हो जाएगा। कुछ लोग कहते है कि साम्यवाद, अस्तित्ववाद और भाषा विश्लेषण के समकक्ष विमर्श भारतीय दर्शन मे ही है और वे भारतीय दर्शन के इन पहलूओ का विवेचन कर रहे है। उनके प्रयत्नो से इस समय भारतीय व्याकरण–दर्शन, भारतीय अर्थ विज्ञान, भारतीय सदवाद के नये नये विवेचन प्रकाशित हो रहे है। यदि इन विवेचनो मे प्राचीन भारतीय दर्शन का कुछ नवीन और सुसंगत विकास है अथवा प्राचीन भारतीय दर्शन के सिद्धान्तो को नयी युक्तियों से समकालीन पाश्चात्य दर्शन से अधिक तर्कसंगत दिखाया गया है तो निश्चय ही ऐसे विवेचन भारतीय दर्शन के अन्तर्गत है। कुछ लोग आधुनिक काल मे परमतत्त्व का स्वयं साक्षात्कार करना और दूसरो को भी कराना तथा उसके आधार पर परमतत्व की व्याख्या करना आधुनिक भारतीय दर्शन है। इस युग मे यहाँ रामकृष्ण, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ जैसे संत हुए हैं, जिन्होने परमतत्त्व का साक्षात्कार किया है। इनकी तत्वनुभूति का दार्शनिक रूप प्राचीन है। परन्तु उसकी व्याख्या नवीन प्रणाली मे हो सकती है। किन्तु प्रणाली की नवीनता से आधुनिक मानस संतुष्ट नही होता है, वह विषय वस्तु की भी नवीनता का आकांक्षी है। इस प्रकार परम सनातन महत्व चाहे जितना हो किन्तु भारतीय दर्शन मे उसका आकारण महत्व नही है आधुनिक भारतीय दर्शन किसी संत या ऋषि का संदेश नही है। वह संरचनात्मक बुद्धिवाद है।

मुख्य शब्द (Key words): *परमतत्त्व, संरचनात्मक, विश्लेषण, अस्तित्ववद, नव्यन्याय,*

प्रस्तावना–

आधुनिक भारतीय दर्शन तीन प्रतिक्रियाओ के फलस्वरूप उत्पन्न हुआ हैं। पहली प्रतिक्रिया पाश्चात्य दर्शन और संस्कृति के प्रति परंपरागत भारतीय दर्शनो की प्रतिक्रिया है। यह प्रतिक्रिया सबसे पहले राजा राममोहन राय के समय मे आरंभ हुई और आज तक चल रही है। दूसरी प्रतिक्रिया प्राचीन भारतीय दर्शन के प्रति आधुनिक भारतीय दर्शन की प्रतिक्रिया है। दयानंद सरस्वती, डॉ. राधाकृष्णन्, डॉ. रामचंद्र दत्तात्रेय रानाडे, गोपीनाथ कविराज आदि द्वितीय पक्ष का समर्थन करते है। तीसरी प्रतिक्रिया आधुनिक भारतीय दार्शनिको की पारस्परिक प्रतिक्रिया है। महात्मा गांधी, रविन्द्रनाथ टैगोर, श्री अरविन्द और रामावतार शर्मा तीसरे पक्ष का समर्थन करते हैं। आधुनिक युग मे अनेक प्राचीन दार्शनिक ग्रन्थो की हस्तलिखित प्रतियॉ उपलब्ध हुई हैं।

आधुनिक भारतीय दर्शन का इतिहास–भारत मे उन्नीसवीं शती के तीसरे दशक से ही आधुनिक भारतीय दर्शन का आरंभ होता है। इसके इतिहास को हम चार युगो मे बॉट सकते है और प्रत्येक युग की विशिष्ट प्रवृत्ति का ज्ञान आसानी से प्राप्त कर सकते है।

(1) राजा राममोहन राय युग (1828)–

इस युग मे राजा राममोहन राय (1772–1833) के अतिरिक्त राधाकांत दूबे, केशवचन्द्र सेन (1838–1884), देवेन्द्रनाथ टैगोर (1817–1905) और रामकृष्ण परमहंस (1834–1886) आते है। इस युग की मुख्य प्रवृत्ति पाश्चात्य दर्शन को स्वीकारना तथा भारतीय दर्शन को उसके अनुकूल करना है। इस काम को राजा राममोहन राय ने सबसे पहले किया और उनका प्रभाव जितना व्यापक ढंग से पडा उतना किसी का नही। इस कारण भी इस युग को राजा राममोहन युग कहा जा सकता है। उन्होने 1828 ई. मे ब्रह्म समाज की स्थापना की। उसके पश्चात् बहुत समय तक इसका उत्थान होता रहा। इसी युग मे ब्रह्म समाज के विरोध मे सनातन धर्म का परिष्कार हुआ। राजा राधाकांत देव एक ऐसे विचारक थे जो राजा राममोहन राय के कट्टर विरोधी थे और परम्परागत भारतीय दर्शन के समर्थक थे उन्होने शब्द–कल्पद्रुम नामक एक महान संस्कृत कोश पॉच भागो मे लिखा। संस्कृत का दूसरा महान कोश वाचस्पत्यम् भी तारानाथ भटटाचार्य द्वारा इसी काल मे लिखा गया। ये दोनो कोश विश्व कोश है और संपूर्ण संस्कृत वाड्मय के अनेक शास्त्रो के ज्ञान से भरे हुए है। किन्तु इन सनातनी विद्वानो से अधिक योगदान साधु निश्चलादास का है, जिसने दादूपंथ को स्वीकार किया था और अद्वैत वेदांत को अपना दार्शनिक मत माना था। उसके 'विचार सागर' और 'वृत्ति प्रभाकर' नामक दो प्रौढ ग्रंथ हिन्दी मे रचे है, जिनके समकक्ष आज भी कोई ग्रंथ किसी भी भाषा मे नही है। धर्म और दर्शन दोनो मे निश्चलदास का मत आज भी बहुत युगीन और नया है। वह हिन्दू मुस्लिम एकता का प्रस्ताव था और अद्वैत वेदांत का कटटर समर्थन था। उसके समय मे संस्कृत माध्यम से जो मुख्य दार्शनिक विचारधरा थी वह नव्यन्याय थी। नव्यन्याय के विद्वान नवद्वीप, मिथिला और वाराणसी मे थे, किन्तु वे केवल प्राचीन ग्रन्थो के टीकाकार ही थे। इसी काल मे टी. एच. कोलबुक ने भारतीय दर्शन की खेज की और मैक्समूलर ने 1874 से 1884 तक 'सेक्रेड बुक्स आव द ईस्ट' के 31 ग्रन्थो का सम्पादन करके 1883 मे एक अद्वितीय पुस्तक लिखी, जिसका शीर्षक है–'इण्डिया हवाट इट कैन टीच अस'। इस पुस्तक के प्रकाशन के बाद पश्चिमी दार्शनिको को पता चल गया कि भारतीय दर्शन का आधुनिक दर्शन के निर्माण मे उपयाग है।

(2) स्वामी दयानंद युग (1875–1920)–

स्वामी दयानंद (1875–1920) पहले राजा राममोहन राय के अनुयायी थे। किन्तु 1875 मे उन्होने आर्यसमाज की स्थापना की और 1881 मे उन्होने अपने को राजा राममोहन राय के सभी अनुयायियों से प्रथक् कर लिया। स्वामी विवेकानंद (1863–1902), स्वामी अभेदानंद, स्वामी रामतीर्थ (1873–1906), स्वामी श्रद्धानंद और गंगाप्रसाद उपाध्याय इस युग के अन्य विचारक है। इस युग की प्रधान प्रवृत्ति परंपरागत भारतीय दर्शन और धर्म को पाश्चात्य दर्शन और संस्कृति से उच्चतर सिद्ध करते हुए हिंदू धर्म की कुरीतियों को दूर करना तथा हिंदूदर्शन मे स्वानुभूति से अधिक तर्क को महत्व देना है। स्वामी दयानंद सरस्वती ने इस काम की पहल की और उनका प्रभाव संपूर्ण उत्तरी भारत पर पडा। उनके प्रभाव से बाल–विवाह, बहु–विवाह, बेमेल–विवाह, छुआछूत, जाति–पॉति आदि की कुरीतियॉ काफी मात्रा मे टूटीं और वेद की वैज्ञानिक व्याख्याऍ की

गयी। महादेव गोविंद रानाडे और बाल गंगाधर तिलक को भी इन्ही प्रवृत्तियो से जोडा जा सकता है। इस युग मे एक और आर्य समाज का प्रचार होता है तो दूसरी ओर उसके विरोध मे सनातन धर्म का प्रचार होता है। स्वामी दयानंद के विरोध मे तिलक को सनातनधर्म का प्रतीक मान सकते है। स्वामी दयानंद सरस्वती ने वेदो के अध्ययन का काफी प्रचार किया। वेदो के अन्तरगत जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सिद्धान्त है, उनकी खोज पर उन्होने बल दिया। यह संयोग की बात है कि मैक्समूलर ने 1875 ई. मे ही 'सेक्रेड बुक्स आफ द ईस्ट' को आरम्भ किया। 1885 ई. मे उन्होने अग्रजी मे भारतीय दर्शन के छः मत नामक ग्रंथ लिखा। उन्होने ऋग्वेद का प्रथम प्रकाशन किया, इस कारण उनको भारतीय लोग मोक्षमूलर (मोक्षमूल ऋग्वेद का लाने वाला) कहते है। इसी काल मे ओल्डेनबर्ग और श्येरबटस्की ने संत पीट्र्सवर्ग से बिबलोथिका बुद्धिका पुस्तकमाला के अंतर्गत 1897 ई. से अनेक बौद्ध ग्रंथो का प्रकासन आरंभ किया। यह पुस्तकमाला 1937 ई. तक बौद्ध ग्रन्थौ का प्रकाशन करती रही।

(3) महात्मा गॉधी युग (1920–1936)–

इस युग मे महात्मा गॉधी (1869–1936) के अतिरिक्त श्रीमती एनीबेसेन्ट, डॉ. भगवानदास (1869–1958), गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर (1861–1941), मुहम्मद इकबाल (1873–1938), विनाबा भावे, किशोरीलाल मश्रूवाला, जवाहरलाल नेहरू, डॉ. राजेन्द्रप्रसाद, मौलाना अबुल कलाम आजाद, आर्चाय नरेन्द्रदेव, संपूर्णानंद, डॉ. जाकिर हुसेन, श्री राजगोपालाचारी आदि विचारक आते है। इस युग की मुख्य प्रवृत्ति पाश्चात्य दर्शन और संस्कृति के प्रति विद्रोह करना तथा यह सिद्ध करना है कि वर्तमान भारतीय जीवन–पद्धति और विचारधरा पाश्चात्य जीवन पद्धतियों और विचारधराओं से अनुशासित नही रह सकती है।

सन् 1920 ई. मे महात्मा गॉधी ने नमक–असहयोग आन्दोलन आरंभ किया। अतएव इसी समय से इस युग का आरंभ माना जा सकता है। यह युग एक दृष्टि से 1942 ई. के भारत छोडो आदोलन तक चलता रहा। किन्तु इसके पहले ही दार्शनिक–जगत मे डॉ. राधाकृष्णन् और अनेक दार्शनिकों का उदय हुआ। इस कारण गांधी–युग को दर्शन के क्षेत्र मे 1936 ई. तक ही माना जा सकता है। इस वर्ष डॉ. राधाकृष्णन् और प्रो. म्योरहेड के सम्पादकत्व मे 'कन्टेम्पोरेरी इण्डियन फिलासफी' का प्रकाशन होता है।

अभिनव स्वतंत्र चिन्तन और कर्म का बीजारोपण गांधी युग से आरम्भ होता है। यही अभय तथा साहस की प्राप्ति होती है, सत्याग्रह नामक नये अस्त्र का प्रयोग होता है और सर्वोदय नामक आदर्श समाज की कलपना होती है। इस प्रवृत्ति के विचारक धर्म और दर्शन की सबसे बडी उपलब्धि उसकी सामाजिक उपयोगिता मानते है। इस युग के सभी विचारक महात्मा गांधी से अत्यधिक प्रभावित है। इसलिए इस युग को महात्मा गांधी युग कहा जा सकता है। महात्मा गांधी की विचारधारा को हिन्दू विचारधारा कहकर मुहम्मद इकबाल (1873–1938) इसके विरोध मे मुस्लिम विचारधारा का समर्थन करते है। रविन्द्रनाथ टैगोर (1863–1902) ने गांधी विचारधारा को स्वदेशी पर बल देने बाली विचारधारा कहा है। राजनीति मे इसी प्रकार एनिबेसेन्ट और सुभाषचन्द्र बोस की विचारधाराओ को गांधी की विचारधारा का टकराव हुआ। किन्तु अंत मे जितने अनुयायी गांधी विचारधारा के निकले उतने किसी अन्य के नही। गांधी ने जिस मानवता को अग्रसर किया वह कही अन्यत्र देखने को नही मिलता है। सत्य और अहिसा के साथ उन्होने सत्याग्रह का अनुपम मेल करके एक प्रगतिशील मानवतावाद को जन्म दिया।

(4) राधाकृष्णन् युग (1936–1952)–

इस युग की प्रधान धटनाएँ विभिन्न भारतीय विश्वविद्यालयो मे दर्शन के आचार्यो के पदो पर भारतीय विद्वानो का पदारूढ होना तथा 'इण्डियन फिलासफिकल काग्रेस' की स्थापना तथा उसके वार्षिक अधिवेशनो का होना है। इन धटनाओ से दर्शनशास्त्र पढाने वाले विद्वान संगठित हुए और उन्होने सामूहिक चिन्तन या सहचिन्तन आरंभ किया; जिसके फलस्वरूप एक नया दर्शन उत्पन्न हुआ जिसे तुलनात्यक दर्शन कहा जाता है। इस दर्शन की मुख्य प्रवृत्ति प्रत्यवाद या आदर्शवाद है। डॉ राधाकृष्णन् इस युग के अग्रणी, वरिष्ठ और विश्वविश्रुत दार्शनिक है। इस लिए इस युग को डॉ. राधाकृष्णन् युग कहा जा सकता है। सर्वप्रथम सी.ई.एम. जोड ने उनके उपर एक स्वतंत्र पुस्तक 1933 मे प्रकाशित की,जिसका नाम काउन्टर अटैक फ्राम द इस्ट : फिलासफी आव राधाकृष्णन् है। फिर 1952 मे पाल आर्थर शिल्प ने राधाकृष्णन् का दर्शन अग्रेजी मे संपादित किया जिसमे अनेक विद्वानो ने राधाक्ष्णन् कं विभिन्न दार्शनिक योगदानो का वर्णन और मूल्यांकन किया है। इस युग को प्रत्ययवादी युग की भी संज्ञा दी जा सकती है। इस युग के अन्य दार्शनिक डॉ. सुरेन्द्रनाथ दास गुप्त, डॉ. रामचन्द्र दत्तात्रेय रानाडे, डॉ. हीरालाल हलधर, डॉ. ब्रजन्द्रनाथ शील, कृष्णचन्द्र भटटाचार्य, शिशिरकुमार मैत्र, अनुकूलचंद्र मुखर्जी, धीरेन्द्र मोहन दत्ता, यम. हिरियाणा, आनंद के. कुमारस्वामी, एम. सूर्यनारायण शास्त्री, एन.जी.दामले, टी.आर.बी. मूर्ति, पी.ओ. राजू, हुमायूँ कबीर, भीषन लाल आत्रेय, रास बिहारी दास, आदि है। इस युग मे भारतीय दर्शन के इतिहास–ग्रंथ लिखे गये, फिर इसी समय भारतीय ज्ञानमीमांसा, भारतीय नीतिशास्त्र, भारतीय सौदर्यशास्त्र, भारतीय समाजविज्ञान आदि दर्शन के विभिन्न शाखओ से संबंधित प्रामाणिक ग्रंथ तथा लेख लिखे गये। अतं मे कुछ मौलिक दार्शनिक कृतियॉ रची गयीं जिनका विश्व भर मे सम्मान हुआ। इन कृतियों मे राधाकृष्णन् की आइडियलिस्टिक व्यू ऑफ लाइफ, कृष्णचन्द्र भटटाचार्य की सब्जेक्ट ऐज फ्रीडम, अनुकूलचन्द्र मुखर्जी की नेचर ऑफ सेल्फ, धीरेन्द्र मोहन दत्त की 'सिक्स वेज आव नोइंग' हिरियाणा की 'द मिशन आव फिलासफी' सुरेन्द्रनाथ दासगुप्त की 'इण्डियन आइडियिलिज्म' और डा. भगवानदास की 'साईंस आव् इमोशन' पुस्तके सर्वथा मौलिक ग्रंथ हैं, जिनका महत्व सदा के लिए रहेगा।

इस युग के प्रत्ययवाद का चरम विकास अद्वैतवेदान्त के आत्मानुभव में माना जाता हैं। इस आत्मानुभव का साक्षात्कार करने वाले में रमण महर्षि (1879–1950) अग्रण्य हैं। उनके अनुयायियों की संख्या देश और विदेश में बढ रही है। टी. एम. पी. महादेव और आर्थर ओसबोर्न उनके प्रमुख समर्थकों में से हैं। जिड्डू कृष्णमूर्ति को भी हम इसी युग का दार्शनिक मानते हैं। उन्होंने भी प्रत्यावाद का आश्रय लेकर अपने अध्यात्मवाद का विकास किया हैं। उन्होने ईश्वरवाद, गुरूवाद, मोक्षवाद आदि का खंडन किया है। विचार स्वतन्त्रा पर उन्होने बहुत बल दिया है। आन्तरिक अनुभूति प्राप्त करना और अपनी समस्त इच्छाओं का निराकरण करना उनके मत से प्रत्येक मनुष्य का लक्ष्य होना चाहिए। श्री वसंतकुमार मल्लिक ने एक नये तत्तव दर्शन का जन्म दिया है, जिससे प्रो. कालिदास भटटाचार्य आदि दार्शनिक प्रभावित है। यह तत्तव दर्शन संबद्ध द्वैतवाद या अकेवलवाद के नाम से पुकारा जाता है। द रियल एण्ड दि निगेटिव, रिलेटेड मलटिपिलसिटि, दी टावरिग वेव और नान–एब्सील्यूट्स उनकी चार कृतियॉ है। साधु शान्तिनाथ भी इसी युग के एक अन्य दार्शनिक है, जो आरम्भ मे अद्वैत वेदांती थे, किन्तु बाद मे अद्वैतवेदांत के आलोचक हो गये। उन्होने संस्कृत, हिन्दी, अग्रेजी और बंगला मे अनेक ग्रन्थ लिखे है। उनका अन्तिम मत प्राच्य दर्शन–समीक्षा मे दिया गया है। सभी दर्शनो का खंडन करना ही उनका मत है। वे कोई दार्शनिक निकाय नही मानते है।

इसी युग के एक अन्य दार्शनिक महर्षि श्री अरविंद (1872–1950) है। वे पहले दर्शन के प्रोफेसर थे और उन्होने जो कुछ लिखा है, वह राधाकृष्णन् युग के शास्त्रीय प्रत्ययवाद के अनुकूल है। इसलिए उनको भी हम इसी केएक दार्शनिक कह सकते है। किंतु इससे उनका महत्तव डॉ. राधाकृष्णन् से कम नही हो जाता है। वास्तव मे राधाकृष्णन् ने अपने युग के दार्शनिको को अपनी कृति से जितना प्रभावित किया है उतना श्री अरविन्द ने नही किया है। इसका कारण श्री अरविन्द की दुरूह भाषा तथा अति नवीन विचार धारा है। परंतु दार्शनिक मौलिकता मे श्री अरविंद राधाकृष्णन् युग के सभी दार्शनिको मे अद्वितीय है। उनकी रचनाएँ एक नये दर्शन और एक नयी सास्कृति को जन्म देती है। उनके अनुयायियों की संख्या दिनादिन विश्व भर मे बढती जा रही है। जो लोग आरंभ से स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानंद या डॉ. राधाकृष्ण् से प्रभावित है और बाद मे श्री अरविन्द के दर्शन की ओर झुकते है वे अनुभव करते है कि जहॉ अन्य लोग केवल आधुनिक भाषा शैली मे एक नितांत आधुनिक दर्शन प्रस्तावित करते है। प्रो. एस.के. मैत्रा, प्रो. जे.एन. छब, डॉ. इद्रसेन, डॉ. करण सिह और श्री अरविन्द वसु ऐसे लोगो के उदाहरण हैं जो आरंभ से ही राधाकृष्णन् युग की विचारधारा से प्रभावित थे और बाद मे श्री अरविंद के अनुयायी हो गये। जिस प्रकार अनेक दार्शनिक श्री अरविंद के अनुयायी है, उसी प्रकार कोई भी राधाकृष्णन् का अनुयायी नही है। इतना होते हुए भी इस प्रत्ययवादी युग को हम डॉ. राधाकृष्णन् युग कहना ही उचित समझते है, क्योकि इस युग की प्रमुख विशेषता सहचिंतन द्वारा एक प्रत्ययवादी विचारधारा को विकसित करना

*Corresponding Author: डॉ. भूपेन्द्र कौर

है। श्री अरविन्द का दर्शन निःसन्देह इस युग की सर्वोत्तम देन है। प्रो. कृष्णचन्द्र भटटाचार्य का दर्शन इसी युग की देन है। उनके दर्शन के समर्थको मे धीरेन्द्रमोहन दत्त, टी.आर.वी. मूर्ति, कालिदास भटटाचार्य, गोपीनाथ भटटाचार्य, प्रवास जीवन चौधरी आदि उल्लेखनीय है। डॉ. रानाडे का दर्शन भी इसी की देन है। इसके समर्थको मे न.ग. दामले, जी.वी. तुलबुले, आर.आर. दिवाकर, के.वी. गजेन्द्रगडकर, रामनाथ कौल, वी.आर. कुलकर्णी, म.श्री. देशपाडे आदि उल्लेखनीय है। प्रशंसको और समर्थकों की दृष्टि से री अरविंद, रमण महर्षि, डॉ. राधाकृष्णन् और प्रो. कृष्णचंद्र भटटाचार्य इस युग के महान दार्शनिकों मे से है।

निष्कर्ष–

इस प्रवृत्ति का इतिहास बहुत लंबा है। प्राचीन दर्शन के सभी संप्रदाय ऋषि–प्रोक्ता थे। इस शती के आरंभ से ही वहॉ प्रत्त्ययवाद जैसी विचारधाराओ का विकास हुआ। वास्तव मे अनेक दार्शनिको के चिंतन से उदभव और विकास हुआ। भारतीय दर्शन सामूहिक चिंतन या सहचिंतन का परिणाम है। यद्यपि टैगोर, गांधी और राधाकृष्णन् इस शती के प्रधान माने जाते है, तथापि उनकी विचारधारा मे उनके अनेक सहयोगियो का भी योगदान निहित है। यह कहने मे भी अतिश्योक्ति नही प्रतीत होती है कि यदि इन सहयोगयिो का चिंतन उनके साथ न होता तो वे अपनी विचारधारा को सोचने, सवॉरने और संगठित करने मे सफल न होते। प्रत्तयय वाद को जन्म देने और विकसित करने मे अनेक विचारको का समान महत्व है। किसी एक विचारक को इन प्रवृत्तियो का मुख्य जनक या प्रवक्ता नही माना जा सकता है। दर्शन या विश्व दर्शन के इतिहास भारतीय दशैन का इतिहास एक अनिर्वाय और महत्वपूर्ण भाग है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. श्वीट्जर अलबर्ट : इडिया थाट एण्ड इटस डेवलपमेट
2. अंडरवुड, ए.सी : कंटेम्पोररी इडियन थाट
3. राधाक्ष्णन्, आदि : कंटेम्पोरेरी इडियन फिलासफी
4. पाण्डेय, संगमलाल : भारतीय दर्शन
5. शिल्व, आर्थरपाल : फिलासफी ऑफ राधाकृष्णन्
6. नीलो, बिल्फ्रेड : इम्पैक्ट ऑफ इडियन थाट आन जर्मन पोएट्स एण्ड फिलाफर्स
7. राधाकृष्णन् स. : महात्मा गांधी
8. मूर्ति, के.स. ; समकालीन भारतीय दर्शन
9. नवरवणे, वी.एस. ;आधुनिक भारतीय चिंतन

*Corresponding Author: डॉ. भूपेन्द्र कौर